Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 4, Petersburg 1865

14. (मृगम्) पेचतुः R. 2, 52, 99 (37 Gorr.). मृगं मेध्यं पक्त्वा R. Gorr. 2, 55, 19. Bhartr. 2, 98. Kathās. 20, 195. Pańkat. 262, 18. Bhāg. P. 9, 9, 21. मर्त्यमत्स्यान् — पचति — अनुरागवह्नौ Bhartr. 1, 84. शूले मत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः M. 7, 20. शूलेन पचति मांसम् P. 5, 4, 65, Sch. स्थाली पचति P. 1, 4, 54, Sch. तण्डुलानोदनं पचति *er kocht aus Reiskörnern einen Brei* Siddh. K. zu P. 1, 4, 51. med. *für sich kochen:* अर्वत्या अन्नं आश्वायां पेचे ṚV. 4, 18, 13. 10, 27, 17. AV. 12, 4, 38. Çat. Br. 5, 3, 5, 4. Āçv. Gṛhj. 4, 4. शक्तितो ऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना M. 4, 32. MBh. 3, 99 = 12, 8864. शाकं यः पचते गृहे 3, 13237. पचान 13239. = act.: पचस्वैतानि (बदराणि) 9, 2801. यो ऽगस्त्याय त्वतिथये पेचे वातापिमिल्वलः Bhāg. P. 6, 18, 14. pass.: गात्राद्ग्निना पच्यमानात् ṚV. 1, 162, 11. 6, 29, 4. ओदनं पच्यमानम् 8, 58, 14. AV. 5, 19, 4. VS. 10, 31. (नागानाम्) पच्यतां चाग्निना भृशम् MBh. 1, 2053. घर्मोष्मणा पच्यमानः M. 9, 231. न च स्म तान्यपच्यन्त *wurden nicht gar* MBh. 9, 2782. (in der Hölle) *braten:* अथ तं नरके घोरे पच्यमानम् 3, 10501. fg. 13, 5710. R. 3, 57, 20. अत्र दुष्कृतकर्माणो नराः पच्यन्ति MBh. 5, 3792. 14, 490. धातुभिः पच्यमानैः *schmelzen* Hariv. 5525. — 2) *backen, brennen* (Backsteine u. s. w.): इष्टकाः Çat. Br. 6, 1, 2, 22. उखाम् 5, 4, 7. — 3) *die Speise im Magen gar kochen, machen, dass sie verdaut wird:* पित्तमन्नपानं पचति Suçr. 1, 78, 5. pass.: येनेदमन्नं पच्यते Çat. Br. 14, 8, 10, 1. — 4) *reifen, zur Reife bringen; zur Entwickelung bringen, dem Ende zuführen:* स ओषधीः पचति ṚV. 10, 88, 10. Çat. Br. 1, 5, 3, 8. यच्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः Çvetāçv. Up. 5, 5. सृष्ट्वा लोकांस्त्रीनिमान्हव्यवाह काले प्राप्ते पचसि पुनः समिद्धः MBh. 1, 8417 = 5, 487. पचत्येव यथा कालो भूतानि विभुरव्ययः R. 6, 8, 16. MBh. 12, 8306. mit dopp. acc. *Etwas zu Etwas entwickeln:* यो पचति लोकानां पुण्यापुण्ये सुखासुखम् *der das Gute und Böse der Menschen in Glück und Unglück umwandelt* Vop. 26, 20. पच्यते *reifen, reif werden; zur Entwickelung gelangen, dem Ende zugehen:* पच्यन्ते यवाः ṚV. 1, 135, 8. फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् VS. 22, 22. Ait. Br. 1, 7. उदुम्बरस्त्रिः संवत्सरस्य पच्यते 5, 24. Çat. Br. 11, 2, 3, 32. अकृष्टपच्या इवौषधयः पेचिरे 1, 6, 1, 3. 4, 3, 1, 4. षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते P. 5, 1, 90. Sch. zu P. 4, 3, 43. कृष्टे स्वयं पच्यते व्रीहिः Vop. 26, 20. सद्य इव सुकृतां हि पच्यते कल्पवृक्षफलधर्मि काङ्क्षितम् Ragh. 11, 50. mit dem acc. der Frucht: उदुम्बरः फलं पच्यते P. 3, 1, 87, Vārtt. 4, Sch. अपक्वाम्रः फलम् Vop. 24, 11. von Geschwüren u. s. w.: विद्रधिः पच्यते Suçr. 1, 282, 10. — सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः Kathop. 1, 6. (जन्तवः) गर्भवासेषु पच्यन्ते क्षाराम्लकटुके रसैः । मूत्रश्लेष्मपुरीषाणां पहर्षैर्भृशदारुणैः ॥ MBh. 13, 5708. fg. तिर्यग्योनिसहस्रेषु पच्यते योनिविभ्रवात् Hariv. 7762. ब्राह्मणाः क्षत्रियो वैश्यो विकर्मस्थश्च पच्यते wohl *geht seinem Ende zu* MBh. 13, 6205. लोकः पच्यमानः *die heranreifende, sich ausbildende Welt* Çat. Br. 11, 5, 3, 1.

— caus. पाचयति, अपीपचत् Sch. zu P. 6, 1, 4. 11. 7, 4, 1. 93. 94. 1) *kochen* (intrans.) *machen* so v. a. *kochen* (trans.) oder *kochen* (trans.) *lassen:* क्षीरौदनम् Çat. Br. 14, 9, 4, 13. आत्मने पाचयेन्नान्नम् MBh. 3, 104. 12, 8395. 14, 737. पाचयत्योदनं देवदत्तेन यज्ञदत्तः P. 1, 4, 52, Sch. med. *für sich kochen lassen* P. 1, 3, 74, Sch. नक्तमेव च भक्तानि पाचयेत नराधिपः MBh. 12, 2643. pass. पाच्यमान *gekocht werdend* MBh. 13, 5709. दारुभिः स्नेहपाचितैः *in Oel gekocht* 11, 798. — 2) *reifen machen:* क्षेत्रपत्यैनं पाचयन्ते TBr. 1, 8, 4, 2. — 3) *zur Reife —, Entwickelung —, zu Ende bringen, heilen:* (श्लेष्मा रसः) भिन्नविड्डादिपिष्टादीनि पाचयति Suçr. 1, 155, 20. — desid. पिपक्षति Sch. zu P. 6, 1, 4. 7, 4, 79.

— intens. पापच्यते, पापचीति Sch. zu P. 3, 1, 22. 6, 1, 4. 7, 4, 83. med. *heftig kochen* (intrans.), — *braten* (intrans.) Suçr. 2, 369, 10. पापच्यमानानां निरये स्वैरमङ्गलैः Bhāg. P. 3, 24, 27. bildlich: पापच्यमानेन हृदा 4, 3, 21. — desid. vom intens. पापचिषति, °ते Sch. zu P. 7, 4, 79. 80.

— अनु *allmählich reif werden lassen:* अतः समृद्धे ऽनुपचन्स्वधातून् Bhāg. P. 8, 5, 35. pass. *allmählich reif werden* (bildlich): शुभानामशुभानां च नेह नाशो ऽस्ति कर्मणाम् । प्राप्य प्राप्यानुपच्यन्ते (getrennt gedruckt) क्षेत्रं क्षेत्रं तथा तथा ॥ MBh. 14, 497.

— अभि *aufsieden* (trans.): क्षीरं स्थालीगतमभिपच्यमानम् Suçr. 1, 149, 11.

— आ s. आपाक.

— उद् s. उत्पचनिपचा und उत्पचिष्णु. caus. *aufkochen, erwärmen:* उत्पाचित Suçr. 2, 67, 2.

— नि s. उत्पचनिपचा und निपाक.

— प्रणि und प्रनि P. 8, 4, 18, Sch.

— निस् s. निष्पक्व.

— परि pass. 1) *gekocht —, gebraten werden:* क्रिमितत्परिपच्यते (nach Benfey's Verbesserung) Pańkat. 199, 10. नरके परिपच्यते Hariv. 6079. — 2) *reif werden* so v. a. *seine Folgen haben:* पूर्वजन्मकृतं कर्म कालेन परिपच्यते Hariv. 4875. अकृताशप्रज्वलनं घृततैलवसादिवर्षणं चापि सद्यः परिपच्यते Varāh. Bṛh. S. 96, 10. *seinem Ende zugehen:* मृत्युमाणां महतां चैव भूतानां परिपच्यताम् MBh. 12, 8306. — Vgl. परिपक्व, °पाक, °पाकिन्. — caus. *kochen, braten:* अङ्गारे परिपाचितम् Suçr. 1, 230, 15; vgl. अङ्गारपरिपाचित.

— प्र *zu kochen* (trans.) *anfangen* P. 8, 1, 44, Sch. *zu kochen* (trans.) *pflegen* R. 3, 76, 24. — Vgl. प्रपाक.

— अभिप्र *kochen, reifen, entwickeln:* अनिलैरभिप्रपच्यमानानां महाभूतानां संघातो घनः संजायते Suçr. 1, 322, 6.

— संप्र pass. *völlig reif werden,* von Geschwüren u. s. w.: विद्रधिः Suçr. 1, 281, 21.

— वि *verkochen, durch Kochen auflösen:* तस्मिन्सर्पिर्विपचेयुः Kātj. Çr. 24, 3, 12. Suçr. 1, 32, 20. — pass. *braten* (intrans.): दह्यमाना विपच्यन्ते न तत्रास्ति पलायनम् MBh. 13, 6122. *verdaut werden:* गुरुं भुक्तमिदं कोष्ठे कथमन्नं विपच्यते 14, 570. *zur Reife kommen, seine Folgen haben:* (समारम्भाः) गर्भशालिसधर्माणस्तस्य गूढं विपेचिरे Ragh. 17, 53. नक्षत्रपीडा बहुधा यथाकालाद्विपच्यते Suçr. 1, 103, 2. मृगविहंगरुतं च लोष्टस्य चाप्सु तरणं त्रिभिरेव विपच्यते मासैः Varāh. Bṛh. S. 96, 7. — Vgl. विपक्तिम, °पक्व, °पाक. — caus. *verkochen, durch Kochen auflösen* Suçr. 1, 161, 7. 2, 349, 20.

— सम् vgl. संपक्व. — caus. *zusammenbacken:* संपाचयेद्भस्म Suçr. 1, 47, 8. प्रक्लेदवांस्तथास्रावी भृशं संपाचयेत्त्वचम् 2, 291, 7.

— अभिसम् pass. *reif werden zu einem best. Zeitpunkt* (acc.): शरदमोषधयो ऽभिसंपच्यन्ते Pańkav. Br. 21, 14, 3.

2. पच् (= 1. पच्) adj. am Ende eines comp. *kochend, backend:* ओदन° (nom. °पक्) P. 6, 4, 15, Sch. In der Stelle: अन्नस्रष्टा च पक्ता च पचभोक्ता (wohl पक्वभोक्ता; vgl. पक्वभुज् MBh. 12, 10395) पचे नमः Agneja-P. im ÇKDr. könnte पचे auch loc. von पच sein.

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007